वैदिक शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा का समन्वय
(शिक्षा पर राजनीति के प्रभाव के विशेष संदर्भ में)

अखिलेश कुमार द्विवेदी
एम.फिल. (राजनीति विज्ञान)
मो.नं. – 8871205133
RESEARCH SCHOLAR (POLITICAL SCIENCE)
Institution /Organization: APS UNIVERSITY
Address: REWA (M.P.)
Mobile No. : 8871205133
Email : akhilesh.dwivedi86@gmail.com

अवधारणात्मक विश्लेषण

वैदिक शिक्षा –

वैदिक शिक्षा भारत की सबसे प्राचीन शिक्षा व्यवस्था है। भारत में अतीत में सम्पूर्ण जगत में शिक्षा नाम की कोई चीज ही नहीं थी उस समय भारतीय समाज में वैदिक शिक्षा का प्रचलन था। वैदिक शिक्षा गुरूकुल पद्धति पर आधारित थी। शिष्य अपने गुरू के सानिध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त किया करता था। यह शिक्षा न केवल सामाजिक थी बल्कि अस्त्र–शस्त्र, संगीत, राजनीति, ज्योतिष, न्याय शास्त्र, दर्शन शास्त्र, खगोल शास्त्र आदि विषयों पर आधारित थी।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक जीवन की शिक्षा थी। वैदिक शिक्षा बाल केन्द्रित नहीं थी। वर्तमान में शिक्षा बाल केन्द्रित है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को केन्द्र में रखकर तैयार किया जाता है। वह वैदिक काल में नहीं था। शिक्षा व्यक्ति का सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के लिए अनिवार्य तत्व है। इस तथ्य को प्राचीन भारतीयों ने भलीभांति समझाया। इसी कारण भारतीय सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही भारत में शिक्षा की उचित व्यवस्था की गई थी। गुरू शिक्षार्थी को अपना सानिध्य देते थे और शिक्षा प्रदान किया करते थे। वैदिक शिक्षा भारत की अपनी मौलिक शिक्षा व्यवस्था थी।

भारतीय गुरूकुल में देश ही नहीं अपितु विदेश से आए हुए शिक्षार्थी भी शिक्षा ग्रहण किया करते थे। विदेशी यात्रियों ने भी अपनी पुस्तकों और वृत्तान्तों में यहाँ की शिक्षा व्यवस्था का ध्यानाकर्षण किया है। भारत में तक्षशिला, नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय हुआ करते थे, जिसमें चाणक्य जैसे आचार्य का शिष्यों को सानिध्य मिलता था। माना जाता है कि तक्षशिला के

विद्यालय के प्रहरी भी प्राचीन भाषा संस्कृत में वार्तालाप किया करते थे। ऐसी श्रेष्ठ वैदिक शिक्षा गुरूकुल का प्रमाण कहीं और देखने को नहीं मिलता है।

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक जीवन की शिक्षा थी। वैदिक शिक्षा बाल केन्द्रित नहीं थी। वर्तमान में शिक्षा बाल केन्द्रित है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को केन्द्र में रखकर तैयार किया जाता है। वह वैदिक काल में नहीं था। शिक्षा व्यक्ति का सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के लिए अनिवार्य तत्व है। इस तथ्य को प्राचीन भारतीयों ने भलीभांति समझाया। इसी कारण भारतीय सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही भारत में शिक्षा की उचित व्यवस्था की गई थी। गुरू शिक्षार्थी को अपना सानिध्य देते थे और शिक्षा प्रदान किया करते थे।

आधुनिक शिक्षा –

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज की उन्नति उस देश की शिक्षा पर आधारित होती है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही उस देश के नागरिकों को सर्वागीण विकास होता है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली को परतन्त्रकालीन शिक्षा प्रणाली माना जाता है। ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित होने के कारण जिसे सन् 1835 ई. में लागू किया गया। जिस तीव्रगति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि, उद्देश्य चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें।

सन् 1835 ई. में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए विचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है।

इसके परिणामस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा को प्रयोग में लाने बाद भी 1935 ई. में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत् के आंकड़े को भी पार नहीं कर पाई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र तेरह प्रतिशत ही थी। इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गो को भारत के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश समाज में बींसवीं सदी तक मानना था कि श्रमिक के बच्चों को शिक्षित करने का तात्पर्य है उन्हे जीवन में अपने कार्य के लिए अयोग्य बना देना। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने निर्धन परिवारों के बच्चों के लिए इसी नीति का अनुपालन किया। लगभग पिछले 200 वर्षो की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह शिक्षा नगर तथा उच्चवर्ग केन्द्रित श्रम तथा बौद्धिक कार्यो से रहित थी। इसकी बुराइयों को सर्वप्रथम गांधी जी ने 1917 ई. में गुजराज एजुकेशन सोसाइटी के सम्मेलन में उजागर किया तथा शिक्षा में मातृ भाषा के स्थान और हिन्दी के पक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर तार्किक ढंग से रखा।

जब इस देश में अंग्रेजी राज फैलने लगा उस समय ऐसा नही था कि यहाँ शिक्षा का प्रसार न रहा हो। मुस्लिम राज्य काल में फारसी उत्तर भारत में काफी प्रचलित हो गई थी और फारसी के मदरसे उत्तर भारत के प्रायः सभी नगरों में काम कर रहे थे। जगह–जगह धनी–मानी लोग अपने घरों पर भी मौलवी रखा करते थे जो फारसी पढ़ाते थे। इसके सिवा संपूर्ण देश में संस्कृत–टोल और पाठशालाएँ भी काम करती थी। यही नही नगरों और गावों में रहने वाले प्रत्येक पंडित का घर छोटी–मोटी पाठशाला होता था। तात्कालीन संस्कृत विद्यालय आज की तरह सुसंगठित तो नही थे। किन्तु उनकी संख्या काफी अच्छी थी और प्राथमिक

पाठशालाओं की संख्या बहुत अधिक थी जिनमें पढ़–लिखकर लोग व्यवहारिक कामकाज में लग जाते थे। इनके सिवा उच्च विद्यालय भी थे जिनका उद्देश्य न्याय, व्याकरण, दर्शन साहित्य और ज्योतिष तथा आयुर्वेद की उच्च शिक्षा देना था। तत्कालीन शैक्षणिक स्थिति पर एडम की जो रिपोर्ट निकली थी उसमें कहा गया था कि बंगाल बिहार में हर चार सौ व्यक्तियों पर एक स्कूल था। सन् 1821 ई. में मद्रास के गवर्नर सर टॉमस मुनरो ने जो जाँच करवाई थी उससे यह पता चलता था कि मद्रास की सवा करोड़ जनसंख्या में से कोई दो लाख लोग विद्यालय में पढ़ रहे थे। श्री एम.आर परान्जपे ने लिखा है कि उस समय मद्रास के प्रत्येक गांव में एक स्कूल था।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य निम्न है –

1. वैदिक शिक्षा से परिचित होना।
2. वैदिक शिक्षा के प्रभाव को जानना।
3. आधुनिक शिक्षा के विकास में वैदिक शिक्षा के योगदान को समझना।
4. इस बात का ऑकलन करना कि वैदिक काल से लेकर आज तक शिक्षा में क्या–क्या परिवर्तन हुए हैं।
5. वैदिक शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की सीमाएँ –

प्रस्तुत शोध भारत वैदिक कालीन शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय का अध्ययन है। अतः यह भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न आयामों राजनीतिक प्रभाव तक पर सीमित है।

शोध प्रतिधि –

प्रस्तुत शोध समाज वैज्ञानिक है। इस शोध में प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। अतः प्रस्तुत शोध को पूरा करने के लिए पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकें एवं नियतकालिक लेखों के द्वारा आंकड़ों को जुटाया गया एवं विषय का अध्ययन किया गया।

शिक्षा पर राजनीति का प्रभाव :–

दुनिया में भारत पहला देश है जहाँ शिक्षा राजनीति का शिकार है। कभी प्रबन्धतंत्र के स्तर पर, कभी शिक्षक के स्तर पर, कभी छात्र के स्तर पर और कभी दोनों के स्तरों पर। भारत में शिक्षा के कई स्तर हैं। एक, दो, तीन और इससे ज्यादा भी। यहाँ शैक्षणिक संस्थाएँ जातिगत आधार पर चलती है। अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के आधार पर विभाजन सरकार की नीति का ही परिणाम है। जब संस्थाओं की निर्मित ही विभाजन के आधार पर हो तो शिक्षा का भविष्य क्या ?

शिक्षा सीधे तौर पर समाज से जुड़ी होनी चाहिए परन्तु हमारे शिक्षा में समाज के आवश्यक और वैकल्पिक प्रश्नों के लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं है। ऐसे पाठ्यक्रम जो समाज के लिए पोषक हो यहाँ पाठ्यक्रम में सोती सुन्दरी है उसके सोने के बाल एक राजकुमार है जो सोती सुन्दरी को छूता है। पा लेता है। एक ओर ज से जहाज है। दूसरी ओर ज से जमाखोर

विसंगति यह है कि जमाखोर की जरूरत वाले विद्यार्थी को जहाज और जहाज की जरूरत वाले विद्यार्थी को जमाखोर पढ़ाया जाता है।

शिक्षा आर्थिक युग का पूरा–पूरा लाभ उठा रही है वह भी बट गई है। कई स्तरों पर म्युनिसिपल स्तर पर, कान्वेन्ट स्तर पर, सिटी मान्टेंसरी स्तर पर, कैस स्तर पर और सेन्ट्रल बोर्ड स्तर पर। हमारी शिक्षा रंगीन सपने बेचती है। कल्पना बेचती है। हम अभी तक अतीत की शिक्षा दे रहे हैं। जो आज हमारे लिए अधूरी है, अपर्याप्त है। वह मात्र रोजी–रोटी की शिक्षा देती है। अन्र्तदृष्टि नही देती है। रोजी–रोटी के लिए मिलने वाली शिक्षा प्रतिस्पर्धात्मक होती है। परंतु प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा में स्वार्थ व ईर्ष्या का समावेश हो जाने पर वह आत्मघाती हो जाती है। प्रतिस्पर्धा में प्रायः निहित हो रही है। आज यह पाना येन–केन–प्रकारेण हो गया है इसके लिए आदमी–आदमी, प्रतियोगी–प्रतियोगी आपस में संघर्ष कर रहे हैं। इससे मैत्रीभाव समाप्त हो जाता है। आनन्द मर जाता है। हमारी शिक्षा में सीखना महत्वपूर्ण नही है। महत्वपूर्ण है परीक्षा में उत्तीर्ण होना। दो वर्ष के सीखे को, पढ़े को मात्र 35 मिनट में लिखना, 35 मिनट के लिखे को 5 मिनट में जाँचना फिर जाँचते समय कार्य करते हैं और भी कई प्रभाव परीक्षक का मूड, परीक्षक का बौद्धिक वर्गवाद। यदि परीक्षक की उस विषय पर पुस्तक है तो छात्र ने उसे पढ़ा–लिखा है या नहीं। हमारी शिक्षा भविष्य के बेदी पर कभी वर्तमान की बलि चढ़ाती है तो कभी वर्तमान की बेदी पर भविष्य की यानि हमारी शिक्षा में उत्सर्ग जरूरी है। पाया–खोया का सिद्धान्त आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

हमारा लक्ष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को आदर्श बनाना है। वैदिक शिक्षा, वैदिक स्वास्थ्य, वैदिक कृषि, वैदिक सुरक्षा, वैदिक पर्यावरण, वैदिक प्रशासन, वैदिक विधि एवं न्याय, वैदिक सरकार, वैदिक व्यापार तथा उद्योग एवं वास्तविकता में सब कुछ वैदिक। इससे प्रत्येक जीवन आदर्श बनेगा और यह भारत को आदर्श भूतल पर स्वर्ग सा भारत रामराज्य बनाएगा जहाँ कोई भी व्यक्ति किसी कारण से कष्ट नही पाएगा। यह हमारी योजना है और हम इसे अत्यंत शीघ्रता से अपने सामर्थ्य अनुसार पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

ज्ञान की बौद्धिक खोज को संतृप्त एवं पूर्ण करने के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वैदिक ज्ञान को उल्लिखित किया गया है। वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य का चरित्र निर्माण है जो व्यक्ति जीवन में बुरे कार्य करता है। वह अपने माता–पिता, आचार्य व कुल को दूषित करता है। आजकल तो ऐसे दूषित कार्य साधारण लोग नही अपितु धर्मात्मा व महात्मा कहलाने वाले लोग कर रहे हैं। ऐसी वर्तमान शिक्षा, सामाजिक वातावरण विदेशी मूल्यों व मान्यताओं को प्राथमिकता तथा कुछ अन्य कारणों से है। इन कारणों को दूर करने का एक ही उपाय वैदिक शिक्षा का वर्तमान शिक्षा में पूर्ण समावेश करना है। ऐसा करके मनुष्य के चरित्र निर्माण सहित देशोन्नति का लक्ष्य तो प्राप्त होगा ही साथ ही मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को भी प्राप्त करने में आगे बढ़ेगा।

भारत में शिक्षा का अधिकार कानून एक अप्रैल 2010 से लागू किया गया है। इसके दस साल पूरे होने को हैं इसके तहत 6–14 वर्ष तक के बच्चों को अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा का प्रावधान किया गया है। शिक्षा की स्थिति खराब होने का एक कारण शिक्षा में बहुत गहरे तक

घुसी हुई राजनीति भी है। हर फैसले में राजनीति होती है। जहाँ राजनीति होती, वहाँ बाकी नीतियाँ होती हैं। कभी आठवीं तक फेल नहीं करने की नीति लागू होती है तो कभी उसे हटा दिया जाता है। ऐसे ही निर्णय पाठ्यक्रम को लेकर लागू किए जाते हैं। आखिर कब तक शिक्षा जैसे बुनियादी विषयों पर राजनीति होती रहेगी? अगर सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का स्तर ऊपर उठाना है तो उसके लिए सबसे पहले सरकार को, समाज को शिक्षकों को, अभिभावकों को एवं शिक्षार्थियों को भी स्वयं शिक्षा के प्रति अपना नजरिया बदलना चाहिए। शिक्षा से संबंधित बड़े फैसलों में शिक्षकों के विचारों को जगह देनी चाहिए एवं समाज को उनके साथ खड़े रहना चाहिए। शिक्षा में सुधार संभव है लेकिन नजरिया बदलने की जरूरत है।

सुझाव :–

वैदिक कालीन शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा में समन्वय और राजनीति का शिक्षा पर प्रभाव विषय का अध्ययन करने पर जो तथ्य सामने आए उनके सही प्रयोग के लिए निम्न सुझाव इस प्रकार हैं –

1. वैदिक कालीन शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था की आधार है जिसका संबंध हमारे आज के आधुनिक शिक्षा से अभी भी है। जिसके उत्थान के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।
2. आधुनिक शिक्षा संस्कार विहीन होती जा रही है। जिसका परिणाम भारतीय मान्यताओं से परे है। अतः वैदिक शिक्षा को जोड़ना परमावश्यक है।
3. भारतीय शिक्षा पर राजनीति के प्रभाव को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्थाा पूरी तरह से चरमरा गई है। शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति नही हो पा रही है। अतः राजनीति के प्रभाव को पूरी तरह से खतम करने के प्रबन्ध करने चाहिए।

शोध सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. सिंह डॉ. वीरेन्द्र कुमार, 2002, प्राचीन भारतीय संस्कृति, अक्षयवट प्रकाशन, एकेडमी, प्रेस दारागंज, इलाहाबाद।
2. रामधारी सिंह 'दिनकर', 2014, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।
3. उपाध्याय आचार्य बलदेव, 2001, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन पाँच–बी कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी।
4. द्विवेदी डॉ. कपिल देव, 2004, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, रामनारायण लाल, विजय कुमार
   अनिल प्रिंटर्स 19 बी / 13, एल्गिन रोड इलाहाबाद।

पाण्डेय पं. चन्द्रशेखर एवं व्यास, डॉ. शान्ति कुमार नानूराम, 2001, संस्कृत साहित्य की रूपरेखा साहित्य निकेतन, शिवाला रोड गिलिस बाजार, कानपुर।